सोभित मंचन की अवली गजदंतमयी छवि उज्ज्वल छाई।
ईस मनो बसुधा में सुधारि सुधारधर मंडल मंडि जोन्हाई॥

तामँह केशवदास बिराजत राजकुमार सबै सुखदाई।
देवन स्यौं जनु देवसभा सुभ सीय-स्वयम्बर देखने आई॥15॥

शब्दार्थ—अबली = पंक्ति। गजदन्तमयी = हाथी के दाँतों से बनी हुई। ईश = ब्रह्मा। बसुधा = पृथ्वी। सुधाधर = चन्द्रमा। जोन्हाई = चाँदनी।

प्रसंग—जनकपुरी से लौटा हुआ ब्राह्मण ऋषि-मुनियों को धनुषयज्ञ की कथा सुना रहा है।

व्याख्या—हाथी के दाँतों से बनी हुई मचा की कतारें जिनकी शोभा निर्मलता से चारों ओर छिटक रही है, सुशोभित हैं। वे कतारें ऐसी दिखाई देती हैं मानो ब्रह्मा के चन्द्रमण्डल की चाँदनी (ज्योति) को सुधार कर पृथ्वी पर रख दिया हो। केशवदास कहते हैं कि उस पंक्ति में सभी को सुख देने वाले सुन्दर और दयालु राजकुमार सुशोभित हैं जो ऐसे प्रतीत होते हैं मानो देवताओं सहित देवसभा ही सीता के शुभ स्वयंवर को देखने के लिए जुड़ आई हो।

अलंकार—उक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा, अनुप्रास।